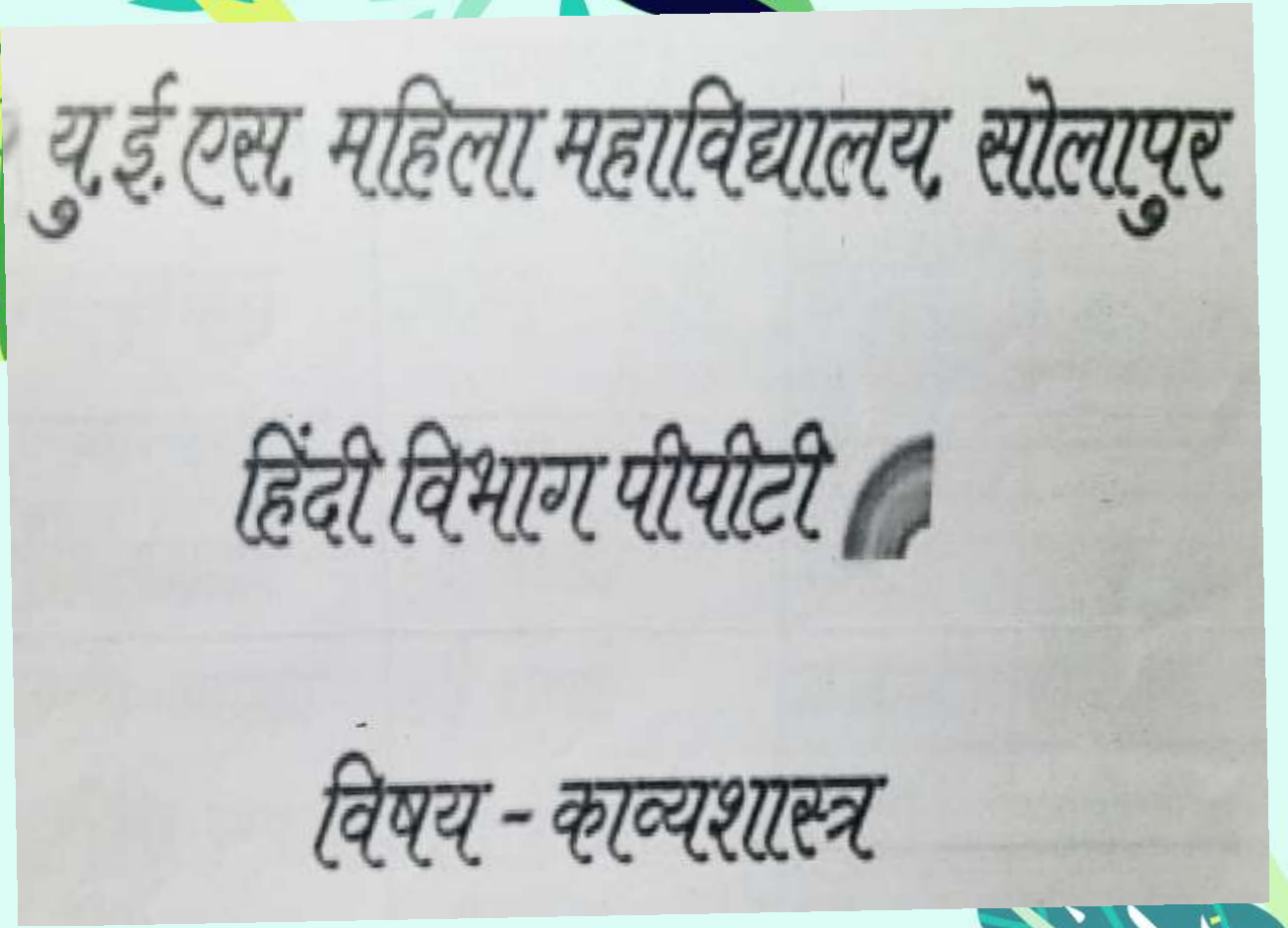

यु.ई.एस. महिला महाविद्यालय सोलापुर

हिंदी विभाग पीपीटी

विषय - काव्यशास्त्र

बी ए भाग तीन

(काव्यशास्त्र)

काव्य-सम्प्रदाय	कालक्रम	प्रवर्तक	ग्रन्थ
1. रस-सम्प्रदाय	200 ई॰पू॰ - 200 ई॰	भरतमुनि	नाट्यशास्त्र
2. अलंकार-सम्प्रदाय	6 वीं शताब्दी	भामह	काव्यालंकार
3. रीति-सम्प्रदाय	8 वीं शताब्दी	वामन	काव्यालंकार सूत्रवृत्ति
4. ध्वनि-सम्प्रदाय	9 वीं शताब्दी	आनन्दवर्धन	ध्वन्यालोक
5. वक्रोक्ति-सम्प्रदाय	10-11 वीं शताब्दी मध्य	कुन्तक	वक्रोक्तिजीवित
6. औचित्य-सम्प्रदाय	11 वीं शताब्दी उत्तरार्ध	क्षेमेन्द्र	औचित्यविचार चर्चा

कुछ महत्वपूर्ण काव्यशास्त्रीय-ग्रन्थ

① दशरूपक - धनंजय

② काव्यप्रकाश - मम्मट

③ अलंकार सर्वस्व - रूय्यक

④ उज्ज्वलनीलमणि - रूपगोस्वामी

⑤ रसगंगाधर - जगन्नाथ

⑥ साहित्यदर्पण - विश्वनाथ

⑦ चन्द्रलोक - जयदेव

⑧ काव्यादर्श - दण्डी

⑨ काव्यानुशासन - हेमचन्द्र

⑩ रससिद्धान्त - नगेन्द्र

भरतमुनि के रससूत्र के व्याख्याकार

आचार्य	सिद्धान्त	निष्पत्ति का अर्थ	आधारित दर्शन
भट्टलोल्लट	उत्पत्तिवाद	उत्पत्ति	मीमांसा दर्शन
शंकुक	अनुमितिवाद	अनुमिति	न्यायदर्शन
भट्ट नायक	भोगवाद/भुक्तिवाद	भुक्ति	सांख्य दर्शन
अभिनव गुप्त	अभिव्यक्तिवाद	अभिव्यक्ति	वेदान्त दर्शन

कुछ महत्वपूर्ण काव्यशास्त्रीय-ग्रन्थ

1. दशरूपक - धनंजय
2. काव्यप्रकाश - मम्मट
3. अलंकार सर्वस्व - रूय्यक
4. उज्ज्वलनीलमणि - रूपगोस्वामी
5. रसगंगाधर - जगन्नाथ
6. साहित्यदर्पण - विश्वनाथ
7. चन्द्रलोक - जयदेव
8. काव्यादर्श - दण्डी ⇒ 7वीं
9. काव्यानुशासन - हेमचन्द्र
10. रससिद्धान्त - नगेन्द्र

* आचार्य भरत के रससूत्र के प्रथम व्याख्याता भट्ट लोल्लट हैं।
* रस निष्पत्ति की विवेचना में 'भावकत्व और भोजकत्व' की कल्पना भट्ट नायक ने की है।
* रस सिद्धान्त की व्याख्या करके सबसे पहले दर्शक की महत्ता अभिनव गुप्त ने स्वीकार की।
* रस को 'ब्रह्मानन्द सहोदर', ब्रह्मास्वाद सहोदर, लोकोत्तर चमत्कार प्राण', 'वेदान्तरस्पर्श शून्य' इत्यादि कहा जाता है।

आभार